नवभारत 4 सितंबर 2024

सुरुचि

प्रभु गणपति जी के कान काफी बड़े हैं. जो हमें बताते हैं कि आप सभी की बातों को ध्यान से सुनें. ये काम तभी संभव है जब आप अपने कान बड़े और खुले रखेंगे.

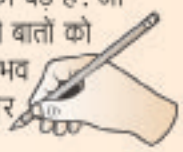

गणेश जी ने अधर्म का नाश करने के लिए हर युग में समय-समय पर अवतार लिए. इन्हीं अवतारों के अनुसार उनकी पूजा होती है. पुराणों के अनुसार हर युग में असुरी शक्ति को खत्म करने के लिए उन्होंने विकट, महोदर, विघ्नेश्वर जैसे आठ अलग-अलग नामों के अवतार लिए हैं. ये आठ अवतार मनुष्य के आठ तरह के दोष दूर करते हैं. इन आठ दोषों का नाम काम, क्रोध, मद, लोभ, ईर्ष्या, मोह, अहंकार और अज्ञान है.

भगवान गणेश के अवतार और खास बातें...

महोदर अवतार

पुराने समय में मोहासुर नाम का एक राक्षस था, उसने देवताओं को पराजित कर दिया और स्वर्ग को अपने अधिकार में ले लिया था. सभी देवता गणेश जी के पास पहुंचे. तब गणेश जी ने महोदर रूप धारण किया. महोदर अवतार यानी बड़े पेट वाले गणेश जी. महोदर भगवान ने मोहासुर को खत्म कर दिया था.यहां मोहासुर का मतलब है मोह. गणेश जी की भक्ति करने वाले लोग सभी तरह के मोह से दूर रहते हैं.

वक्रतुंड अवतार

गणेश ने वक्रतुंड अवतार मत्सरासुर नाम के राक्षस को खत्म करने के लिए लिया था. मत्सरासुर शिव भक्त था. मत्सरासुर ने अपने पुत्र सुंदरप्रिय और विषयप्रिय के साथ मिलकर देवताओं को हरा दिया. तब देवताओं की मदद के लिए गणेश जी ने वक्रतुंड अवतार लिया और मत्सरासुर का अंत किया.मत्सर भी एक बुराई है. मत्सर यानी जलन की भावना. जो लोग दूसरों की धन-संपत्ति देखकर जलते हैं, उन्हें ये बुराई जल्दी से जल्दी छोड़ देनी चाहिए, गणेश जी भक्ति से इस बुराई का अंत जल्दी हो जाता है.

एकदंत अवतार

मद नाम का एक राक्षस था. उसे खत्म करने के लिए गणेश जी ने एकदंत अवतार लिया. मद यानी नशा. मद नाम की बुराई से बचना चाहिए और गणेश जी की भक्ति से ये बुराई जल्दी दूर हो सकती है.

विकट अवतार

विकट अवतार के रूप में गणेश जी ने कामासुर नाम के असुर का वध किया था. इस रूप में गणेश जी मोर पर विराजित हैं. काम यानी कामवासना. इस बुराई से किसी भी व्यक्ति जीवन बर्बाद हो सकता है. इससे बचना चाहिए.

गजानन अवतार

इस अवतार में गणेश जी ने लोभासुर नाम के राक्षस को मारा था. लोभासुर यानी लालच. इस बुराई की वजह से व्यक्ति सही-गलत का फर्क नहीं समझता है, बस धन कमाना चाहता है. इस बुराई से किसी का भी जीवन बर्बाद हो सकता है.

लंबोदर अवतार

क्रोधासुर नाम के राक्षस का वध करने के लिए गणेश जी ने लंबोदर रूप में अवतार लिया था. क्रोधासुर यानी गुस्सा. गणेश जी की भक्ति करने वाले भक्त इस बुराई को जल्दी नियंत्रित कर पाते हैं. क्रोध नियंत्रित रहेगा तो कई समस्याओं से बच सकते हैं.

विघ्नराज अवतार

ममासुर नाम के दैत्य को मारने के लिए गणेश जी ने विघ्नराज अवतार लिया था.एक बार पार्वती अपनी सखियों के साथ बातचीत के दौरान जोर से हंस पड़ीं. उनकी हंसी से एक विशाल पुरुष की उत्पत्ति हुई. पार्वती ने उसका नाम मम (ममता) रख दिया. वह माता पार्वती से मिलने के बाद वन में तप के लिए चला गया. वहीं वो शंबरासुर से मिला. शम्बरासुर ने उसे कई आसुरी शक्तियां सीखा दीं. उसने मम को गणेश की उपासना करने को कहा. मम ने गणपति को प्रसन्न कर ब्रह्माण्ड का राज मांग लिया.

शम्बर ने उसका विवाह अपनी पुत्री मोहिनी के साथ कर दिया. शुक्राचार्य ने मम के तप के बारे में सुना तो उसे दैत्यराज के पद पर विभूषित कर दिया. ममासुर ने भी अत्याचार शुरू कर दिए और सारे देवताओं को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया. तब देवताओं ने गणेश की उपासना की. गणेश विघ्नेश्वर के रूप में अवतरित हुए. उन्होंने ममासुर का मान मर्दन कर देवताओं को छुड़वाया.

धूम्रवर्ण अवतार

अहंतासुर को मारने के लिए गणेश जी ने धूम्रवर्ण अवतार लिया था. इस स्वरूप में गणेश जी का रंग धुंए जैसा था, इसीलिए इनका नाम धूम्रवर्ण पड़ा. अहंतासुर यानी अहंकार, इसकी वजह से रावण, कंस और दुर्योधन जैसे शक्तिशाली लोगों का परिवार सहित नाश हो गया था. इस बुराई को जल्दी से जल्दी छोड़ देना चाहिए.

सब देवन में प्रथम हैं
गणनायक भगवान .
उनसे ही सब कुछ मिले
रिद्धि सिद्धि धन धान..
रिद्धि सिद्धि धन धान
लड्डू का भोग लगाना.
श्रीफल भेंट चढ़ाकर
घी का दीप जलाना..
मंगल करन विघ्नहर्ता
सब जग के स्वामी.
शिव पार्वती तनय
गणनायक अंतर्यामी..

✍ उषा अग्रवाल